

रेवा नाम की महिमा से तो
 खिल उठेगी कली-कली
 आज बागवाँ खुद ही आया
 धूम मचाने गली-गली
 लगे कौड़ी न दाम
 घर में चारों धाम ॥२॥
 रेवा के संग आये गजानन
 करने जगत भलाई
 मात-पिता सुन्दर विधियाँ संग
 लाखों खुशियाँ लाई
 सत्य सनातन की बातें हैं ॥२॥
 लगतीं तुमको जलीं-जलीं

आज बागवाँ-----

जनम्-जनम् के पाप मिटाने
 रेवा दौड़ी आई
 न मांगे ये डीरा-मोती
 न हिदाम न पाई
 दे-दो अपने सभी गमों को ॥२॥
 ले-लो मुझसे-स्वर्ण डली
 आज बागवाँ-----

किया ध्यान से जिसने बंदे
 शुद्ध विधि फल पाया
 रोज-रोज की महिमा देखी
 मूरख हँसत बामाया
 जग को रेवा है जहरीली ३३३ ॥२॥
 मुझको लगती-बहुत भली

आज बागवाँ-----

जहाँ भी होती, शुद्ध विधि ये
 घर को स्वर्ग बनाती
 कर विश्वास में मेरे साथी
 मुक्ति धाम दिहाती
 शुद्ध विधि का, खुला खजाना ३३३ ॥२॥
 तुम-बतलाना कहाँ मिली

आज बागवाँ-----

हो कल्याण सभी जीवों का
 रेवा के संग भाई
 मातृ-पिता भी साथ चल दिये
 करने जगत भलाई
 है "श्रीबाबा श्री" की यही स्थानी ३३३ ॥२॥
 हँसते-हँसते साथ चली-

आज बागवाँ-----